अच्छी शिक्षा

❑ रोहित धनकर

अच्छी शिक्षा किसे कहेंगे ? यह सवाल शिक्षा पर चलने वाले संवाद में काफी महत्वपूर्ण हो चला है। अंग्रेजी में इसे 'क्वालिटी एजुकेशन' के सवाल के रूप में रखते हैं । हम लोग क्योंकि बहुत कुछ अंग्रेजी से अनुवाद करके काम चलाते हैं, अत: 'क्वालिटी एजुकेशन' को 'गुणवत्तापूर्ण शिक्षा' कहते हैं । 'क्वालिटी' का अनुवाद 'गुणवत्ता' और इसे शिक्षा के एक विशिष्ट गुण के रूप में देखना, सवाल को इस रूप में रखने में निहित है । पर बात वही है : अच्छी शिक्षा किसे कहेंगे ? शिक्षा में 'अच्छाई' किसे कहेंगे ? शिक्षा में गुणवत्ता किसे कहेंगे?

वैसे तो शिक्षा में गुणवत्ता का सवाल उतना ही पुराना है जितना पुराना सायास शिक्षा का विचार है । पर इस वक्त इस सवाल के महत्वपूर्ण हो उठने के पीछे तीन-चार प्रकार की चिंतायें पहचानी जा सकती हैं । इनमें से एक चिंता है बाजार भाव की चिंता। अर्थात ग्राहक को अपने दाम का उचित लाभ मिल रहा है या नहीं? जैसे कोई कपड़ा या जूता खरीदता है तो जितना पैसा लगा, उसकी एवज में उसे कपड़े या जूते से लाभ भी मिलना चाहिए । यहां लाभ का मापदण्ड होगा ग्राहक की संतुष्टि। तो वह शिक्षा बेहतर जो अपने ग्राहकों को अधिक संतुष्ट कर सके । भारत के अधिकाधिक लोग सरकार की शिक्षा व्यवस्था से असंतुष्ट होते जा रहे हैं और अपने बच्चों की शिक्षा के लिए उत्तरोतर मोटी रकमें देने के लिए तैयार होते जा रहे हैं । पर शिक्षा में गुणवत्ता का मापदण्ड ग्राहक की संतुष्टि को मानने में कुछ कठिनाइयां है ।

पहले तो यही कि शिक्षा का ग्राहक आखिर है कौन ? बच्चा जो शिक्षित होता है ? माता-पिता जो शिक्षा के लिए खर्च करते हैं ? या राज्य जो अपने नागरिकों को किसी खास किस्म की शिक्षा देना चाहता है ? यदि शिक्षा की गुणवत्ता का मापदण्ड ग्राहक की संतुष्टि माना जाये तो इसमें से किसकी संतुष्टि देखी जायेगी ? जरूरी नहीं कि ये तीनों लोग एक ही प्रकार की शिक्षा से संतुष्ट हों । शिक्षा की गुणवत्ता का मापदण्ड ग्राहक की संतुष्टि को मानने में दूसरी कठिनाई ये है कि शिक्षा का महत्व या उसके गुण को समझने की काबिलियत शिक्षित हो जाने के बाद ही आती है। इससे जो बड़ी कठिनाई पैदा होती है वह यह कि शिक्षा भी अन्य चीजों की तरह विज्ञापन की वस्तु बन जाती है । और फिर शिक्षा का मोल इस बात से आंका जाने लगता है कि विद्यालय का भवन कैसा है, विद्यालय में स्वीमिंग पूल है या नहीं, घोड़े हैं या नहीं ? आदि । आजकल निजी विद्यालयों की बाढ़ आयी हुई है । इनके विज्ञापनों के पीछे झलकती गुणवत्ता की धारणा में अच्छी शिक्षा को या तो प्रतिस्पर्धा में देखा गया है या घोड़ों और वातानुकूलित बसों में ।

तीसरी बात, विज्ञापन बाजार का बहुत तीक्ष्ण और दूर तक मार करने वाला हथियार है । शिक्षा में उत्कृष्टता के मापदण्ड के रूप में विज्ञापित धारणायें इतनी विविध, अस्पष्ट एवं विरोधाभासी हो गयी हैं कि भ्रमित ग्राहक अच्छी शिक्षा पर कोई विचार बना ही नहीं पाता । उसे समझ में नहीं आता इन बहुत से चमकीले विद्यालयों में से किस को उत्कृष्टता का नमूना माने । तब बाजार ऐसे प्रतिष्ठानों को गठित और प्रचारित करता है जो विद्यालयों को उत्कृष्टता का वैसा ही सर्टिफिकेट दे सकें जैसा आई. एस. आई. मार्का चीजों को दिया जाता है । आजकल भारत में नया शगूफा अंतर्राष्ट्रीय बैकलेरियत मान्यता ऐसा ही प्रमाणपत्र है । यहां शिक्षा में उत्कृष्टता विचार की नहीं बल्कि उत्कृष्टता प्रमाणित करने वाले बाजारु प्रतिष्ठानों में अंधश्रद्धा की वस्तु बन जाती है। चूंकि ये प्रतिष्ठान अपने मानदण्ड भी आसानी से सबके सामने नहीं रखते हैं, अत: उन पर समाज में कोई व्यापक चर्चा भी नहीं होती। शिक्षा की गुणवत्ता एक अबूझ वस्तु बन जाती है जो बिकती तो है पर समझ में नहीं आती ।

शिक्षा की उत्कृष्टता को देखने का दूसरा नजरिया सरकारों की जरूरत पूरी करने से संबंधित होता है । सभी राष्ट्र अपने लिए कुछ लक्ष्य निर्धारित करते हैं और शिक्षा को उन लक्ष्यों की प्राप्ति के उपकरण के रूप में देखते हैं। इस नजरिये से जो शिक्षा सरकारों द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को जितना बेहतर तरीके से पूरा करे वह उतनी ही अच्छी शिक्षा है । आजकल अधिकतर सरकारें आर्थिक वैश्वीकरण के दौर में उत्पादक, प्रतिस्पर्धी और उपभोक्तावादी मानसिकता वाले नागरिकों को तरजीह देती हैं । इस नजरिये की समस्या यह है कि यह व्यक्ति को संसाधन के

रूप में उपयोग करने की वस्तु बना देता है । व्यक्ति से राष्ट्र और समाज का रिश्ता निर्माता और निर्मिति का द्विआयामी रिश्ता न रह कर मात्र 'निर्मित संसाधन' का हो जाता है । ऐसा संसाधन जिस का उपयोग किया जा सकता है, जिसे खर्च किया जा सकता है । अर्थात इन्सान की वकत उस की उपयोगिता भर पर टिक जाती है।

शिक्षा में उत्कृष्टता को समझाने में इन दो आधारों की बात यहां केवल उदाहरण के लिये उठायी गई है । यहां उन को न तो ठीक से परिभाषित किया है न ही उन की कोई गहरी समालोचना की है। बस इशारा भर किया है। पर इतना साफ है कि इस तरह के आधारों में आम समस्या यह है कि इन से व्यक्ति खाली नजर आता है । उसके प्रेरणास्रोत, उस की जिन्दगी की अर्थवत्ता एवं उसके आदर्श सब उसके अपने वजूद से बाहर निकल कर बाजार में सफलता या राष्ट्र के वर्चस्व पर टंग जाते हैं । वह स्वयं खोखला हो जाता है ।

आगे मैं शिक्षा की उत्कृष्टता की एक और - मेरे विचार से अधिक समर्थ - धारणा बनाने की कोशिश करूंगा। शिक्षा में गुणवत्ता की धारणा नि:संदेह स्वयं शिक्षा की धारणा से बंधी होती है। ''अच्छी शिक्षा क्या है ?'' इस सवाल का ठीक-ठाक जवाब तभी दे सकते हैं जब पहले ''शिक्षा क्या चीज है?'' इस सवाल का ठीक-ठाक जवाब हमारे पास हो । अत: मैं बात यहीं से शुरू करूंगा ।

शिक्षा को हम चाहे जैसे समझें उसमें कम से कम तीन पक्ष तो हैं ही : शिक्षार्थी, शिक्षक और शिक्षा की अंतर्वस्तु। शिक्षार्थी सीखता है, शिक्षक सीखने में मदद करता है तथा अंतर्वस्तु, वह सब कुछ जो शिक्षार्थी सीखता है । इंसान के लिए सीखना उसके अस्तित्व एवं अस्मिता में मूलभूत परिवर्तन की प्रक्रिया है । यह उसके 'बनने' की प्रक्रिया है । कविता की समझ या इतिहास की समझ या गणित की समझ जब बनती है, उद्भूत होती है, तो इन्सान को भी नया बना देती है । उसे बदल देती है। यह उसके वजूद का हिस्सा बन जाती है । अब वह कभी पहले जैसा नहीं बन सकेगा । यहां से पीछे लौटने का रास्ता नहीं होता । जो समझ बनी है - कविता, इतिहास या गणित की - वह बदल तो सकती है, पर उसे पौंछ कर साफ नहीं किया जा सकता । उसे 'अन-हुआ' (अन-डू) नहीं किया जा सकता। इस दृष्टि से देखें तो शिक्षा की उत्कृष्टता में सर्वाधिक महत्वपूर्ण चीज यह है कि शिक्षार्थी के विकास में, उसके बनने में, शिक्षा का क्या योगदान रहा ? और यह बहुत हद तक 'सीखने' पर निर्भर करता है। अर्थात 'शिक्षा की उत्कृष्टता' 'सीखने की उत्कृष्टता' पर निर्भर करती है । पर सवाल फिर वही है : सीखने की उत्कृष्टता के मापदण्ड क्या होंगे ? यदि हम 'सीखने की उत्कृष्टता' को परिभाषित कर पाये तो शिक्षा की उत्कृष्टता की परिभाषा का कम से कम एक पहलू हमारी पकड़ में आ जायेगा। सीखना यहां क्रिया के रूप में नहीं बल्कि संज्ञा के रूप में है। अर्थात अधिगम। सीखने की प्रक्रिया से होने वाली प्राप्ति, वह जो सीखा गया । अत: प्रश्न है कि अधिगम की उत्कृष्टता के मानदण्ड क्या हो सकते हैं ?

सीखने में उत्कृष्टता के तीन आयाम बहुत साफ तौर पर रेखांकित किये जा सकते हैं । एक, अधिगम-मूल्य; दो, सीखने की क्षमतायें; तथा तीन, अर्जित ज्ञान की मात्रा । अधिगम मूल्यों से आशय है वे रुझान, मूल्य एवं आदतें जो सीखने एवं ज्ञान-सृजन में मदद करते हैं । जैसे बौद्धिक ईमानदारी, सीखने की इच्छा, ज्ञान और स्पष्टता के प्रति आकर्षण, सीखने के प्रति उत्साह एवं आत्मविश्वास । बौद्धिक ईमानदारी एवं स्पष्टता के प्रति आग्रह अर्जित ज्ञान की जांच करके उस की उपयुक्तता को सुनिश्चित करने के लिए भी आवश्यक है ।

सीखने की क्षमताओं से आशय है वे क्षमतायें जो आगे अपने आप सीखने के 'उपकरणों' के रुप में काम आ सकें। उदाहरणार्थ अन्वेषण की क्षमता अर्थात जांच-पड़ताल के उपुयक्त तरीके चुनकर उनका समर्थ उपयोग कर पाना, अर्जित क्षमताओं और ज्ञान को आगे सीखने में उपयोग कर पाना, संदर्भानुसार समस्या समाधान में काम में ले पाना, आदि । यहां इशारा कुछ कर सकने की काबिलियत की तरफ है । ज्ञान निर्माण की क्षमताओं की तरफ है।

सीखने में उत्कृष्टता का तीसरा मानदण्ड हो सकता है अर्जित ज्ञान की मात्रा । ज्ञान शब्द का उपयोग यहां समझ, जानकारी, तथा दक्षताओं सभी को समाहित करता है । अर्जित ज्ञान की मात्रा एवं सीखने की क्षमताओं में सीधा संबंध है । जितना ज्ञान बढ़ेगा उतनी ही क्षमतायें भी बढ़ेंगी। पर कई बार इस तरह से सिखाया जाता है कि शिक्षार्थी चलता फिरता तथ्य-भंडार भर बन कर रह जाता है । वह अपने 'अधपके ज्ञान' का कुछ भी उपयोग नहीं कर पाता है । इस स्थिति को समझने एवं उससे निपटने के लिये जरूरी है कि 'सीखने की क्षमताओं' और 'अर्जित ज्ञान भण्डार' को कुछ हद तक, कुछ उद्देश्यों के लिये, अलग करके देखें ।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि सीखने की उत्कृष्टता उतनी ही अधिक होगी जितना कि शिक्षार्थी के अधिगम मूल्य अधिक विकसित होंगे, जितना कि उस के सीखने की क्षमतायें अधिक विकसित होंगी, जितना कि उसका अर्जित ज्ञान भण्डार बड़ा होगा । साथ ही मेरे विचार से अधिगम मूल्य और सीखने की क्षमताओं का विकास ज्ञान भण्डार की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण मानदण्ड है ।

सीखने में उत्कृष्टता को इस तरह से परिभाषित करके हमने शिक्षा में उत्कृष्टता के एक आयाम को पहचान लिया है। पर केवल इसके आधार पर हम उत्कृष्ट शिक्षा की परिभाषा नहीं बना सकते । जब ऊपर हमने शिक्षा के तीन पक्षों - शिक्षार्थी, शिक्षक एवं शिक्षा की अंतर्वस्तु - की बात की थी तो वह उस के न्यूनतम अर्थों में की थी । शिक्षा का सदा ही सामाजिक संदर्भ भी होता है। शिक्षार्थी और शिक्षक दोनों किसी समाज का हिस्सा होते हैं । शिक्षा की अंतर्वस्तु के रूप में जो ज्ञान, क्षमतायें और मूल्य चुने जाते हैं वे उस समाज में उपलब्ध एवं बड़े सामूहिक 'ज्ञानाधार' में से चुने जाते हैं एवं समाज की अपेक्षाओं, आकांक्षाओं के आधार पर चुने जाते हैं । शिक्षा की जरूरत एक समाज में ही महसूस की जाती है । अत: शिक्षा के प्रयोजन, चाहे वे कितने भी अस्पष्ट हों, एक समाज में ही निरूपित होते हैं। अत: शिक्षा में उत्कृष्टता का एक और आयाम उन उद्देश्यों को पूरा करने से जुड़ा होता है जो समाज विशेष ने बच्चों को शिक्षा देने के लिए तय किये हों। कुछ हद तक तो ये उद्देश्य 'सीखने की उत्कृष्टता' की धारणा में ऊपर प्रतिबिम्बित हुए हैं । व्यापक ज्ञान आधार तथा उसका समस्या समाधान में उपयोग, दोनों का जिक्र है । यह समस्या समाधान सामाजिक जीवन के संदर्भ में ही है । अत: शिक्षा के एक महत्वपूर्ण प्रयोजन की तरफ इशारा करता है । पर यह बात पूरी नहीं है । शिक्षा में उत्कृष्टता का एक और आयाम जरूरी है : वह है, अच्छे जीवन एवं समाज संबंधी आदर्शों का अर्थात शिक्षा के माध्यम से समृद्ध एवं पोषित होने वाले आदर्शों को शिक्षा में उत्कृष्टता का मानदण्ड मानना जरूरी है ।

ऊपर के विवेचन में हमने सीखने की उत्कृष्टता के मानदण्डों के रूप में अधिगम मूल्यों, सीखने की क्षमताओं एवं अर्जित ज्ञान भण्डार की व्यापकता को प्रस्तुत किया है । मूल्य एवं क्षमताओं के उदाहरण दिये हैं । ये सभी उदाहरण ऐसे हैं जो ज्ञान की अधिकारिकता, उपयोगिता एवं सीखने में स्वायत्तता की तरफ इशारा करते हैं । पर ज्ञान-आधार की व्यापकता एवं क्षेत्रों के कोई उदाहरण नहीं दिये हैं। पर इसके लिए संकेत सीखने से संबंधित मूल्यों एवं क्षमताओं में निहित हैं । अर्थात वह ज्ञान जो सीखने में स्वतंत्रता, जांच की प्रकृति, समस्या समाधान में उन का उपयोग, आदि को विकसित करने में सहायक हो। क्योंकि हम शिक्षाक्रम का निरुपण नहीं कर रहे हैं । बल्कि सीखने में उत्कृष्टता की व्याख्या भर कर रहे हैं। अत: यहां अधिक विस्तार में जाने की जरूरत नहीं है ।

इसी तरह शिक्षा के द्वारा समृद्ध एवं पोषित होने वाले मानवीय एवं सामाजिक आदर्शों को भी चिन्हित किया जाना जरूरी है । यह काम सीखने की उत्कृष्टता को परिभाषित करने से कहीं ज्यादा कठिन है।

विभिन्न समाजों में एवं एक ही समाज के विभिन्न समूहों में जीवन के आदर्श बहुत भिन्न-भिन्न हो सकते हैं । अत: सर्वमान्य आदर्शों का कोई वक्तव्य तैयार कर पाना बहुत ही कठिन है । कहने को तो न्याय, समता, अहिंसा, शांति, स्वतंत्रता, प्रेम, आदि बहुत से आदर्श प्रस्तुत किये जाते हैं । पर एक तो यह सूची कभी पूरी नहीं होती और दूसरे इनमें से प्रत्येक की व्याख्यायें एकाधिक होती हैं । यही नहीं, इनमें प्राथमिकता तय करना भी एक कठिन काम है। इस सब पर विस्तार में जाना यहां संभव नहीं हैं। फिर भी शिक्षा की गुणवत्ता की बात कर रहे हैं तो कुछ आदर्शों के चुनाव की बात करनी जरूरी भी है । मेरे विचार से ये आदर्श मानवीय समता, कर्म व विचार की स्वायत्तता, दूसरों के लिए संवेदनशीलता एवं विवेकशीलता ही हो सकते हैं। समता के आदर्श का आशय यह है कि सभी मानव बराबर हैं अपने लिये वांछनीय जीवन के चुनाव में एवं उस जीवन के लिये प्रयत्न करने में यह अधिकार सभी का समान रूप से है । स्वायत्तता का आशय है अपने चुनाव में, अपने निर्णयों में, स्वाधीनता । अर्थात जो चुनाव हम करें वह सकारण हो तथा कारण हमारे अपने हों । संवेदनशीलता माने दूसरों के मानसिक एवं शारीरिक सुख-दु:ख से सरोकार रखना, उनके प्रति 'सह-अनुभूति' रखना । विवेकशीलता का आशय है निर्णयों एवं मान्यताओं के तार्किक आधारों के प्रति आग्रहशील रहना । विवेक में यह भी निहित है कि किसी परिस्थिति में निर्णय लेने से पहले जहां तक हो सके सभी संबंधित पहलुओं पर विचार किया जाये । निर्णय के कोई आधार हों जो अन्य संबंधित व्यक्तियों के सामने रखे जा सकें। उन पर उनकी सहमति के लिए तर्क प्रस्तुत किये जा सकें । वास्तव में ये सभी आदर्श मिल कर एक विवेकशील, स्वायत्त एवं संवेदनशील व्यक्ति के विकास में समर्थ होने चाहियें । इस बात के

लिये तर्क दिये जा सकते हैं कि विवेकशील, स्वायत्त एवं संवेदनशील व्यक्ति लाजमी तौर पर शांति प्रिय होगा तथा हिंसा के बजाय बातचीत एवं आपसी सहमति को तरजीह देगा । पर उसके लिये अंतिम आदर्श समता, स्वायत्तता एवं न्याय होंगे । अहिंसा और शांति आदर्श तो हैं पर न्याय, समता एवं स्वायत्तता की कीमत पर नहीं ।

अभी तक जो कुछ कहा गया है वह बस इतना है कि अच्छी शिक्षा के कम से कम दो आयाम होंगे। एक सीखने की उत्कृष्ता; तथा दो, शिक्षा द्वारा विकसित आदर्शों की उत्कृष्टता । क्या इससे अच्छी शिक्षा पूरी तरह परिभाषित हो जाती है ? या फिर कोई और भी आयाम रह जाता है ? मेरे विचार से कम से कम एक आयाम और रह जाता है। वह है शिक्षण विधियों की उत्कृष्टता । पर सवाल फिर वहीं होगा : अच्छी शिक्षण विधि किसे कहेंगे ? शिक्षण विधि की गुणवत्ता के लिये निम्न चार मानदण्ड शायद यथेष्ट होंगे : एक, विधि प्रभावी हो अर्थात गुणवत्तापूर्ण सीखना, जो ऊपर परिभाषित है, उस विधि से संभव हो । अर्थात इस प्रकार सिखाने में समर्थ हो कि अधिगम मूल्यों, सीखने की क्षमताओं एवं ज्ञान आधार में समुचित विकास हो। दो, विधि मेहनत, समय एवं संसाधनों की दृष्टि से कम खर्चीली हो। अर्थात सीखने की गति तेज हो तथा संसाधन कम लगें। तीन, जो शिक्षार्थी को आकर्षित कर सके तथा चार, जो नैतिक दृष्टि से उपयुक्त हो । किसी भी विधि को अच्छा-बुरा कहने के लिए इन चार पहलुओं पर विचार करना होगा ।

यहां मेरा प्रस्ताव यह है कि शिक्षा की गुणवत्ता को समझने के लिये मूलत: ये तीन मानदण्ड काफी हैं। निरपेक्ष एवं अमूर्त रूप से कहें तो ये मानदण्ड हैं : एक, मानवीय एवं सामाजिक आदर्श; दो, सीखने की गुणवत्ता; तथा तीन शिक्षण विधि की गुणवत्ता। इसे और स्पष्ट करना चाहें तो निरपेक्ष एवं अमूर्त नहीं रख सकेंगे । तब एक फ्रेमवर्क उभरेगा जो शिक्षा की गुणवत्ता को समझने के लिये न सिर्फ अधिक स्पष्ट संकेत दे सकेगा बल्कि चयनित मूल्यों की तरफदारी भी करेगा । अत: हम कह सकते हैं कि शिक्षा की गुणवत्ता को समझने के लिये निम्न मानदण्ड काम में लिये जा सकते हैं :

1. शिक्षा के आदर्श - समता, स्वायत्तता, संवेदनशीलता एवं विवेक

2. सीखने की गुणवत्ता -

   (i). अधिगम मूल्य - बौद्धिक ईमानदारी, सीखने की इच्छा, स्पष्टता एवं ज्ञान के प्रति आकर्षण, सीखने का आत्मविश्वास।

   (ii). सीखने की क्षमतायें - अन्वेषण की क्षमता, अर्जित ज्ञान का आगे सीखने में उपयोग कर पाना, समस्या समाधान ।

   (iii). ज्ञान-आधार का विस्तार - जानकारियों, अवधारणाओं, नियमों, तरीकों आदि की अर्जित मात्रा ।

3. शिक्षण विधि की गुणवत्ता

   (i). विधि की प्रभाविता अर्थात 'गुणवत्तापूर्ण शिक्षण का सामर्थ्य'

   (ii). विधि की कुशलता अर्थात शीघ्र, कम खर्चीले तरीके ।

   (iii). नैतिक उपयुक्तता ।

   (iv). शिक्षार्थी के लिए रुचिकर होना ।

यहां दो-तीन सवालों पर विचार करना आवश्यक लग रहा है । एक तो यह कि आजकल की बहुप्रचारित धारणा ''ग्राहकों की संतुष्टि ही गुणवत्ता का मानदण्ड है'' का शिक्षा की गुणवत्ता की इस प्रस्तावित धारणा से क्या संबंध है ? यह कहना तो मुश्किल है कि शिक्षा के तीनों संभावित ग्राहक - बच्चा, अभिभावक एवं समाज/राज्य - इस प्रकार की शिक्षा से संतुष्ट होंगे ही। पर यह कहा जा सकता है कि यह शिक्षा बच्चे अर्थात शिक्षार्थी के हित में रहेगी क्योंकि यह उसे विवेकशील, समर्थ एवं स्वतंत्र बनायेगी और विवेकशील, समर्थ और स्वतंत्र बनना उसका जन्मसिद्ध अधिकार है । यह उसके जीवन के अधिकार का ही एक रूप है । मेरा मानना यह है कि ग्राहकों की

संतुष्टि यह देखने के लिए उपयुक्त हो सकती है कि ये गुण कहां अधिक विकसित हो रहे हैं । पर यह भी याद रखना जरूरी है कि शिक्षा में संतुष्टि की नाप-जोख कठिन एवं मेहनत का काम है क्योंकि यह कोई एक मुश्त मिलने वाला माल नहीं है । साथ ही इसे प्राप्त करने के लिए शिक्षार्थी को सक्रिय प्रयत्न करने होते हैं ।

दूसरा सवाल यह हो सकता है कि गुणवत्ता की उपरोक्त धारणा में विद्यालय भवन, शिक्षक का प्रशिक्षण, शिक्षण सामग्री, शाला से पास होने वाले बच्चों का प्रतिशत, आदि का कोई जिक्र नहीं है । जबकि शिक्षा की गुणवत्ता पर आजकल की बहस में तो यही चीजें प्रमुख रूप से उभरती हैं ? मेरे विचार से गुणवत्ता को भवन आदि के माध्यम से परिभाषित करना मुद्दे को और अधिक उलझाता है। इस का यह आशय नहीं है कि भवन और संसाधन जरूरी नहीं हैं । बल्कि यह है कि वे गुणवत्ता प्राप्ति के साधन भर हैं, असली चीज नहीं । अत: उनसे संतुष्ट नहीं हुआ जा सकता । वास्तव में जब यह पूछा जाता है कि गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा की धारणा क्या हो तो कई सवाल एक साथ उठते हैं । शिक्षा की गुणवत्ता का सवाल, विद्यालय की प्रभाविता का सवाल, शिक्षा-तंत्र की प्रभाविता का सवाल, विद्यालय एवं तंत्र के संसाधनों की समृद्धि का सवाल, आदि-आदि । यहां यह आग्रह किया जा रहा है कि यदि हम गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के सवाल पर कोई स्पष्टता चाहते हैं तो इन सवालों के अलग-अलग वजूद को पहचानना होगा।

इस बात को समझने के लिए उपरोक्त तीनों मानदण्ड़ों के आधार पर हम एक और ढांचा बनाते हैं :

1. शिक्षा के आदर्श -	प्रतिस्पर्धा की भावना का विकास, येन-केन-प्रकारेण अधिकाधिक धनोपार्जन।
2. सीखने की गुणवत्ता	(i). अधिकाधिक तथ्यात्मक जानकारी का संग्रह।
	(ii). परीक्षा में उसे क्रमबद्ध तरीके से ज्यों का त्यों लिख पाना ।
3. विधि	(i). शीघ्रातिशीघ्र अधिकाधिक मात्रा में रटना ।
	(ii). दण्ड के भय से ।
	(iii). रटने के गुर सिखाकर ।

मान लीजिए कि कोई शिक्षा इन आधारों पर दी जाती है तथा बच्चों की परीक्षा आदि भी इसी के अनुरूप ली जाती है । यह भी मान लें कि बच्चे इन सब में सफलता भी प्राप्त करते हैं । तो क्या इसे हम गुणवत्तापूर्ण शिक्षा कहेंगे? एक समता आधारित जनतांत्रिक समाज में तो इसे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा कहना कठिन ही लगता है । क्योंकि इस के आदर्श संकुचित हैं, जनविरोधी हो सकते हैं । सीखना अधूरा है एवं समझ बनाने वाला नहीं है । तथा विधि अप्रभावी एवं नैतिक दृष्टि से अस्वीकार्य है । पर ऐसे विद्यालय की कल्पना की जा सकती है जो अपने 95 प्रतिशत बच्चों को उपरोक्त शिक्षा वांछित स्तर तक दे पाती है । तो हम कहेंगे कि शिक्षा तो गुणवत्ता में निम्न दर्जे की है, पर यह विद्यालय प्रभावी है, समर्थ है । अर्थात इससे जो काम चाहा गया वह बखूबी करता है । अब हम एक पूरे तंत्र की कल्पना कर सकते हैं जिसमें 95 प्रतिशत बच्चे सफलतापूर्वक यह निम्न दर्जे की शिक्षा प्राप्त करते हों तो इस तंत्र को समर्थ एवं प्रभावी तो कहना ही पड़ेगा । पर शिक्षा तो फिर भी निम्न दर्जे की ही रही ।

तो फिर शिक्षक-छात्र अनुपात, शिक्षण सामग्री की उपलब्धता, भौतिक संसाधन, अकादमिक संबलन, सभी बच्चों का विद्यालय आना, पांचवी पास करना, आदि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का हिस्सा हैं या नहीं ? मेरे विचार से ये सब गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सभी बच्चों को मुहैया करवाने की आवश्यक शर्तें हैं । पर ये शिक्षा की गुणवत्ता को परिभाषित नहीं करती । न ही सुनिश्चित करती हैं । यदि हम गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की कोई धारणा बना सकें तो ये चीजें उसे मुहैया करवाने वाले तंत्र की प्रभाविता एवं सामर्थ्य को जरूर परिभाषित करती हैं । शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार नहीं हो पाने का एक बड़ा कारण यह है कि उसे परिभाषित करने वाले लोगों की नजर आवश्यक सामग्री, संसाधन एवं विद्यालय भवन तक ही जा पाती है । अधिक से अधिक परीक्षा में पास बच्चों के प्रतिशत या बच्चों के अंकों के प्रतिशत तक जाती है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की धारणा इन्हीं में उलझ कर रह जाती है । निजी विद्यालयों के विज्ञापन, जो अपने भवन की सुन्दर तस्वीरों एवं परीक्षा में छात्रों द्वारा प्राप्त अंकों के बल पर अपने आप को बेहतर सिद्ध करने के लिए दिये जाते हैं, वे भी गुणवत्ता की इसी संसाधन एवं परीक्षा आधारित धारणा को लेकर चलते हैं । यह धारणा भ्रामक है । हम यदि देश के सभी बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की व्यवस्था करना चाहते हैं तो पहले उसकी एक बेहतर परिभाषा बनानी पड़ेगी । ऊपर प्रस्तावित धारणा को इस दिशा में एक कदम के रूप में देखा जा सकता है ।◆